



सुरलोक समाचार

पत्रकारिता के छात्रों द्वारा सम्पादित

नई दृष्टि, नए विचार

हिन्दी संदर्शिका



श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय, देव नगर, नई दिल्ली-110005

दिसम्बर, 2025

पृष्ठ संख्या - 1

>> विचार

>> दिल्ली दर्शन

>> विद्यार्थी विशेष

‘मंथन की पहल: रंगमंच, गांधी के विचार और प्रसाद साहित्य पर गहन विमर्श



श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के हिंदी तथा हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' ने सितंबर और अक्टूबर 2025 के दौरान विभिन्न साहित्यिक और शैक्षणिक कार्यक्रमों की एक श्रृंखला का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इन आयोजनों में हिंदी की शुद्धता और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने वाली प्रतियोगिताओं से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच जैसे सामयिक और दार्शनिक विषयों पर

विशिष्ट व्याख्यान शामिल थे। इन कार्यक्रमों में महाविद्यालय के छात्रों के साथ-साथ अन्य महाविद्यालयों के प्रतिभागियों ने भी उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में, 'मंथन' द्वारा दो चरणों में अंतर महा विद्यालयीन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 23 सितंबर 2025 को "चित्र पहचान प्रतियोगिता" तथा "श्रुतलेख, मुहावरे एवं लोकोक्ति प्रतियोगिता" आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में भाषिक अभिव्यक्ति और साहित्यिक समझ को बढ़ाना था।

इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए, 25 सितंबर 2025 को "साहित्यिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता" और "पटकथा लेखन प्रतियोगिता" का

आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को हिंदी की शब्दावली और पटकथा लेखन जैसी कलाओं से परिचित कराना था।

भारतीय और पाश्चात्य रंगमंच पर विशिष्ट संगोष्ठी

24 सितंबर 2025 को 'मंथन' द्वारा 'भारतीय और पाश्चात्य रंगमंच: साम्य और वैषम्य' विषय पर एक विशिष्ट संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रख्यात वक्ता श्री रवींद्र त्रिपाठी ने भारतीय और पाश्चात्य नाट्य शैलियों की विशेषताओं, उनके विकासक्रम, मंचन शैलियों और तकनीकी पहलुओं की तुलनात्मक विवेचना प्रस्तुत की। श्री त्रिपाठी ने बताया कि भारतीय रंगमंच (जैसे कथकली और लोकनाट्य) में भाव, संगीत और नृत्य का सम्मिश्रण

अत्यंत महत्वपूर्ण है, जबकि पाश्चात्य रंगमंच में यथार्थवादी और सामाजिक विषयों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है। यह ज्ञानवर्धक व्याख्यान छात्रों में सांस्कृतिक दृष्टिकोण और वैश्विक रंगमंच के प्रति रुचि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ।

गांधी और प्रसाद साहित्य पर दोहरे व्याख्यान

10 अक्टूबर 2025 का दिन दो महत्वपूर्ण शैक्षणिक विमर्शों का साक्षी बना। डॉ. राजीव रंजन गिरि ने 'गांधी की बुनियादी शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होंने गांधी जी के 'नई तालीम' के सिद्धांतों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के साथ जोड़कर उसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने राष्ट्रीय एकता,

नैतिकता, हस्तकला प्रशिक्षण और कौशल-आधारित शिक्षा में गांधीवादी शिक्षा की महत्ता को स्थापित किया। इसके पश्चात, प्रोफेसर रामनारायण पटेल ने 'प्रसाद साहित्य के विविध आयाम' विषय पर केंद्रित एक व्याख्यान दिया। प्रोफेसर पटेल ने जोर दिया कि जयशंकर प्रसाद का साहित्य केवल कविता या कला नहीं है, बल्कि यह "जीवन के आध्यात्मिक लोक से जुड़ने की मांग है।" उन्होंने प्रसाद की कृतियों में निहित गहन विचारों, दार्शनिक पहलुओं और अस्तित्ववादी दृष्टिकोण की व्याख्या की, जिससे श्रोताओं को प्रसाद की रचनाओं को एक नई दार्शनिक दृष्टि से समझने का अवसर मिला।

अंकित सिंह
तृतीय वर्ष

धर्मेन्द्र पर्दे के हीरो से संसद तक की कहानी



बॉलीवुड के 'ही-मैन' और करोड़ों दिलों की धड़कन रहे धर्मेन्द्र, अब इस दुनिया में नहीं रहे। उनकी विरासत, उनका सिनेमा और उनका व्यक्तित्व हमेशा याद रखा जाएगा। अभिनय की दुनिया में अमिट पहचान बनाने के बाद, धर्मेन्द्र ने राजनीति में भी कदम रखा था। 2004 में भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें राजस्थान के बीकानेर से लोकसभा चुनाव मैदान में उतारा था, उनकी लोकप्रियता ने उन्हें शानदार जीत दिलाई। धर्मेन्द्र ने इस चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी रामेश्वर लाल डूडी को बड़े अंतर से हराया। उनकी जीत ने साबित किया कि सिल्वर स्क्रीन पर कमाया गया सम्मान और प्रशंसा राजनीति में भी काम की रही, कारगर रही। जनता ने उनपर भरोसा जताया जिससे वो जीतकर संसद तक पहुंचे।

हालांकि, धर्मेन्द्र का राजनीतिक सफर फिल्मी करियर जितना लंबा और चमकदार नहीं रहा। सांसद रहते हुए उनकी संसद में उपस्थिति और सक्रियता को लेकर सवाल उठे, विपक्ष ने 'गैर-सक्रिय सांसद' कहकर उनकी आलोचना भी की। खुद धर्मेन्द्र ने बाद में एक इंटरव्यू में

कहा था 'मैं दिल का आदमी हूँ, राजनीति मेरे बस की नहीं। एक अभिनेता को अभिनेता ही रहना चाहिए।' यह बयान उनके अनुभवों, संघर्षों और राजनीति से दूरी की झलक देता है। हालांकि, राजनीति में उनका कार्यकाल छोटा रहा, लेकिन वह बीकानेर में कई विकास कार्यों और जनता से अपनत्व के लिए आज भी याद किए जाते हैं।

धर्मेन्द्र सिर्फ अभिनेता नहीं थे— वे भावनाओं के प्रतीक थे, सादगी, विनम्रता और भारतीयता की चलती-फिरती तस्वीर थे। संसद में उनकी भूमिका भले ही सीमित रही हो, लेकिन जनता की उम्मीदों और सम्मान में कभी कमी नहीं आई। उनके राजनीतिक सफर ने यह सिखाया कि लोकप्रियता और जनसमर्थन, राजनीति में प्रवेश तो आसान बना सकते हैं, लेकिन निरंतर सक्रियता और जमीनी जुड़ाव ही राजनीति में असली पहचान बनाते हैं। धर्मेन्द्र अब नहीं हैं, लेकिन उनकी मुस्कान, संवाद, दमदार स्क्रीन प्रेजेंस और राजनीति में उनका छोटा लेकिन यादगार सफर, इतिहास का हिस्सा रहेगी। उनके चाहने वालों के लिए वे सिर्फ अभिनेता नहीं थे— एक युग थे.. ही-मैन याद रहेंगे, हमेशा

सिद्धांत
तृतीय वर्ष

किताबें और न्यूरोसाइंस



हाल ही में कुछ न्यूरोसाइंटिस्ट्स ने एक दिलचस्प शोध किया। उन्होंने पाया कि अगर कोई व्यक्ति हर दिन सिर्फ किसी भी किताब का एक पन्ना भी पढ़ता है, तो उसका दिमाग ज्यादा सक्रिय रहता है और मानसिक रूप से भी वह संतुलित महसूस करता है। हर साल अक्टूबर में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार की घोषणा होती है। इसी दौरान कई अंतरराष्ट्रीय सर्वे भी किए जाते हैं। इस बार आए एक सर्वे की रिपोर्ट बताती है कि अब पहले के मुकाबले कम लोग किताबें पढ़ते हैं। यानी लोगों में पढ़ने की आदत धीरे-धीरे कम हो रही है।

विज्ञान कहता है कि पढ़ना सिर्फ दिमाग की कसरत नहीं है, बल्कि यह हमारे मस्तिष्क को सही दिशा देने का एक तरीका है। किताबें हमें न सिर्फ ज्ञान देती हैं, बल्कि हमारी सोचने और समझने की

क्षमता को भी गहराई देती हैं। जिस तरह की किताब हम पढ़ते हैं, उसका असर सीधा हमारे दिमाग और सोच पर पड़ता है, हर किताब अपने अंदर एक अलग ऊर्जा लेकर आती है। न्यूरोसाइंटिस्ट बताते हैं कि अगर हम दिन के सिर्फ 10 मिनट भी पढ़ने में लगाएं, तो हमारी याददाश्त और सोचने की क्षमता दोनों बेहतर होती हैं। इसलिए अगर किताबें पढ़ना आपकी रोजमर्रा की आदत का हिस्सा है, तो यह आपके लिए बहुत फायदेमंद है। और अगर अभी नहीं है, तो इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाइए, इससे न सिर्फ आपका दिमाग और सोचने की शक्ति बढ़ेगी, बल्कि आपके ज्ञान में भी लगातार इजाफा होगा।

पलक गुप्ता
द्वितीय वर्ष

लोकतांत्रिक गणराज्य!

भारत एक अनोखा लोकतांत्रिक गणराज्य है जहाँ संविधान जनता को शामिल कर बताता है, लेकिन असलियत में वह सरकारी फाइलों जैसी रहस्यमय है। यहाँ लोकतंत्र का त्योहार यानी चुनाव आते ही नेताजी को कच्ची सड़कें, बूढ़ी अम्मा के पैर और गाय का चारा याद आने लगता है।

लेकिन 5 साल की श्सेवा का आलम यह है कि पुल बनने से पहले टूट जाते हैं और ठेकेदार इलाज के बहाने विदेश उड़ जाते हैं। हमारी संसद अब एक रंगमंच बन गई है, जहाँ दिन में माइक तोड़े जाते हैं और रात में साथ बैठकर बिरयानी खाई जाती है। महंगाई पर सवाल पूछो तो जवाब मिलता है कृष्ण प्याज नहीं खाती, और गंभीर राष्ट्रीय मुद्दों की जगह चर्चा ₹100 ग्राम वजनश पर होती है।

यहाँ मुफ्त के वादे टीवी सीरियल के उस श्शाने वाले कलश की तरह हैं, जो कभी नहीं आता। विडंबना यह है कि यहाँ सबको श्शेतिहासिक राजा बनना है, संविधान के अनुसार सामान्य काम करने का वक्त किसी के पास नहीं है।

अन्या शुक्ला
तृतीय वर्ष

दिल्ली : राजधानी में वायु गुणवत्ता की हालत खस्ता



दिल्ली में वायु प्रदूषण का स्तर लगातार भयावह होता जा रहा है। कई इलाकों में कोहरे और धुंध की मोटी चादर छाई रहती है। हवा की गुणवत्ता सूचकांक 400-500 के बेहद खतरनाक स्तर को पार कर चुकी है, जिससे लोगों के लिए सामान्य सांस लेना भी मुश्किल हो गया है। दीपावली के बाद प्रदूषण में आई तेज वृद्धि को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कड़ा रुख अपनाते हुए दिल्ली-एनसीआर में 12वीं तक के स्कूल बंद करने और केंद्र व राज्य सरकारों को तत्काल सख्त कदम उठाने के निर्देश दिए थे।

स्विस वायु गुणवत्ता रिपोर्ट 2023 के अनुसार, भारत वायु गुणवत्ता में गिरावट के मामले में बांग्लादेश और पाकिस्तान के बाद तीसरे स्थान पर है, जबकि दिल्ली लगातार पाँचवीं बार दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी के

रूप में दर्ज की गई है। हवा की बिगड़ती सेहत के साथ-साथ यमुना नदी भी बढ़ते प्रदूषण का शिकार है, जहाँ इस बार अप्रैल से ही जहरीला झाग दिखाई देने लगा है, जो औद्योगिक कचरे, सीवेज निकासी और जलस्तर में गिरावट का संकेत है। दिल्ली की हवा में PM 2.5 की मात्रा WHO के मानकों से कई गुना अधिक है, जिससे भारत की 96% आबादी गंभीर प्रदूषण वाली हवा में रहने को मजबूर है और लाखों लोगों में सांस की बीमारियाँ, आँखों में जलन, गले में खराश, और हृदय संबंधी जोखिम बढ़ रहे हैं। वाहनों से निकलता धुआँ, उद्योगों के उत्सर्जन और पंजाब-हरियाणा में पराली जलाने जैसी समस्याएँ हर साल इस संकट को और गंभीर बनाती हैं, जबकि राजनीतिक स्तर पर समाधान की बजाय केवल दोषारोपण ही देखने को मिलता है।

राजधानी में रहने वाले गरीब और मजदूर तबके के लिए यह प्रदूषण जीवन के लिए दोहरी मार है, क्योंकि बढ़ती महंगाई और कम आय के बीच महंगे इलाज का बोझ उठाना उनके

लिए बेहद कठिन होता जा रहा है। भारतीय और ग्रीक दर्शन में वायु को जीवन का आधार कहा गया है, और उपनिषदों में 'वायु: वै प्राणः' जैसे मंत्र मानव जीवन के लिए हवा के महत्व को स्पष्ट करते हैं। किंतु आधुनिक जीवनशैली, अनियोजित शहरीकरण और प्रकृति के प्रति हमारी उदासीनता ने पर्यावरण को खतरे में डाल दिया है। प्रकृति हमारी साझी विरासत है। यदि हमने अभी भी जागरूक होकर जीवनशैली और नीतियों में सुधार नहीं किया तो आने वाली पीढ़ियों के लिए सांस लेना भी चुनौती बन सकता है। इसलिए यह समय सामूहिक प्रयास का है, जहाँ सरकार, समाज और हर नागरिक को मिलकर हवा और पानी को बचाने की दिशा में ईमानदार कदम उठाने होंगे।

अंकित सिंह
तृतीय वर्ष



नई शिक्षा नीति-2020 के लिए मार्गदर्शक: विश्वविद्यालय में सहायता केंद्र शुरू



शिक्षा के क्षेत्र में आए नए बदलावों के बीच 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' को गहराई से समझना विद्यार्थियों के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है। दिल्ली विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के शैक्षणिक उत्थान के लिए प्रतिबद्ध रहा है, और इसी शृंखला में विश्वविद्यालय प्रशासन ने नए नियमों को सरलता से समझाने हेतु एक 'सहायता केंद्र' का शुभारंभ किया है। यह पहल स्नातक एवं स्नातकोत्तर दोनों स्तरों के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के मन में, जो चार-वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम चुन रहे हैं या शोध-सह ऑनर्स डिग्री में रुचि रखते हैं, क्रेडिट प्रणाली और चतुर्थ वर्ष के नियमों को लेकर अनेक प्रश्न उठते हैं। इन सभी जटिलताओं को सुलझाने के लिए यह

केंद्र एक मजबूत आधार का कार्य करेगा।

नई शिक्षा नीति के प्रभावी और सुचारु कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए स्थापित यह केंद्र विश्वविद्यालय परिसर के सम्मेलन केंद्र, कक्ष संख्या 5 (द्वार संख्या 4 के समीप) में संचालित है। यहाँ आने वाले विद्यार्थियों को न केवल सटीक और आधिकारिक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, बल्कि उनकी समस्याओं का मैत्रीपूर्ण वातावरण में त्वरित समाधान भी किया जाता है। अक्सर विद्यार्थी सुनी-सुनाई बातों या भ्रामक जानकारीयों के कारण तनाव में आ जाते हैं; ऐसे में यह पटल उन्हें विश्वसनीय मार्गदर्शन प्रदान करता है। अपने भविष्य को सही दिशा देने और किसी भी प्रकार की शैक्षणिक दुविधा के निवारण हेतु विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे इस सुविधा का लाभ अवश्य उठाएँ। विश्वविद्यालय का यह प्रयास निश्चित रूप से विद्यार्थियों के लिए एक सुगम और बाधा-रहित शिक्षा सुनिश्चित करने में मील का पथर साबित होगा।

सौरभ मिश्रा
तृतीय वर्ष

दहेज



एक पिता की व्यथा लिखनी थी, लिखना था, कि कैसे हृदय कचोट रहा है उनका अब। कल बिटिया बिदा हुई थी चौखट से, और आज होना था पगफेरा। पर उदास है सब, सभी टूट गए हैं क्यों? क्योंकि बिटिया नहीं रही अब। बची है केवल उसकी झुलसी नग्न काया रसोई घर के फर्श पर। अरे नहीं! कमरे में देखा जाकर, उसके नए सूटकेस बिखरे पड़े हैं, खुला है ताला सबका, शायद गहने और कपड़े बाहर किए हैं। मगर किसने? खैर। पूछा पिता ने बिलखते हुए सबसे सबकुछ एक सुर में कहा सभी ने, एक हादसे ने ले ली इसकी जान, बेचारी ! बेसुध बेबस गिरे वही पर पिता न रो पाए, न कुछ कह पाए जब आँख खुली तो अस्पताल में डॉक्टर पास खड़े थे, जुबान लड़खड़ाई, मगर बोले घर वालों से मेरे कहना, छोटी बिटिया को पगफेरे पर जरूर घर लाना हर तिनका बेच देना घर से, मगर, दहेज में कोई कसर मत रहने देना।

अनामिका झा
तृतीय वर्ष

मुखर प्रवक्ता



शब्द डोलते हैं प्रतिदिन, जीवन के घोर प्रभंजन में । हो शब्द सिंहासन को समर्पित, तो धिक्कार उठे अंतरमन में ।।

शब्द उनको किए समर्पित, जो दीन, हीन सुख वंचित है । शब्द मेरे हैं प्रेम समर्थक, मनुजों के दुख संचित है ।।

मैं मानवता का श्रोता हूँ, मानवता ही बोता हूँ । ना ही आलोचना के भय से मैं, निरपेक्ष मर्यादा खोता हूँ ।।

ना ही सिंहासन का चाकर मैं, ना ही सरकारी भक्ता हूँ । सच कहता मैं कवि नहीं, जनता का मुखर प्रवक्ता हूँ ।।

आशुतोष पांडेय
901
तृतीय वर्ष

स्मार्टफोन के बढ़ते उपयोग से युवाओं में बढ़ता मानसिक तनाव



आज का युवा स्मार्टफोन को एक उपकरण की तरह नहीं बल्कि अपने जीवन का अभिन्न अंग समझता है। वह स्मार्टफोन के बिना अपने जीवन की कल्पना करने से भी डरता है। लेकिन इस स्मार्टफोन से स्कूल और कॉलेजों के छात्रों में नींद संबंधी समस्याओं में तेजी से वृद्धि देखी गई है। यह देखा गया है कि देर रात तक स्मार्टफोन और सोशल मीडिया का उपयोग लगातार बढ़ता जा रहा है, जिसके साथ बच्चे रात तक मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं। युवाओं में स्मार्टफोन का अत्यधिक उपयोग अब मानसिक स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। शहर में स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा किए गए एक हालिया अध्ययन में बताया गया है कि 16 से 25 वर्ष आयु वर्ग के अधिकांश युवा रोजाना 6 से 9 घंटे तक मोबाइल फोन का उपयोग करते हैं। लगातार स्क्रीन पर बने रहने से उनमें मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन और बेचैनी जैसे लक्षण तेजी से बढ़ रहे हैं। सोशल

मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे इंस्टाग्राम, फेसबुक, X (ट्विटर) आदि जैसे ऐप्स पर लगातार बने रहने से युवाओं के अंदर तुलना, प्रतिस्पर्धा और नकारात्मक सोच की भावना बढ़ रही है। कई युवा देर रात तक मोबाइल उपयोग करते हैं, जिससे नींद पूरी नहीं हो पाती। इसके कारण दिनभर थकान महसूस होती है और पढ़ाई तथा काम पर ध्यान लगाना मुश्किल हो जाता है। जब युवा मोबाइल से कुछ समय दूर रहते हैं, तो उनमें बेचैनी और घबराहट बढ़ जाती है, जिसे 'डिजिटल स्ट्रेस' कहा जाता है। माता-पिता और शिक्षकों का कहना है कि स्मार्टफोन उपयोग पर नियंत्रण न होने से युवाओं का सामाजिक व्यवहार भी प्रभावित हो रहा है और परिवार के साथ समय बिताने में कमी एवं वास्तविक जीवन की गतिविधियों से दूरी बढ़ रही है।

सुझाव और समाधान

स्वास्थ्य विशेषज्ञ सुझाव देते हैं कि युवाओं को प्रतिदिन कुछ समय

मोबाइल से दूर रहकर शारीरिक गतिविधियों, खेलकूद, पढ़ाई और परिवार के साथ बातचीत में समय बिताना चाहिए। साथ ही, स्क्रीन टाइम को सीमित करने और सोने से पहले इंटरनेट उपयोग कम करने से तनाव में काफी कमी लाई जा सकती है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि युवा तकनीक का उपयोग समझदारी और संतुलित तरीके से करें, ताकि स्मार्टफोन सुविधा का साधन बने, तनाव का नहीं।

दिव्यांश जोशी
द्वितीय वर्ष

मैं उसका हूँ बस उसका हूँ

पागल ही थी शायद वो मेरी हर बात पे हंसती थी । यकीन पूरा करती थी लेकिन दुनिया से बचाकर रखती थी । हां वो थोड़ी अकड़ू थी थोड़ा गुस्सा ज्यादा था । पर जब लड़खड़ाया राहों में उसने ही तो संभाला था । हर बात पे मुझसे लड़ती थी पर परवाह भी तो करती थी झल्ला मुझको कहती थी लेकिन मुझपे ही वो मरती थी । संभाल के इतना रखती थी क्योंकि खोने से डरती थी । मैं उसका हूँ बस उसका हूँ सबको कहती फिरती थी ।।

मोहित वशिष्ठ
तृतीय वर्ष

गुरुद्वारा बंगला साहिब



दिल्ली शहर अपनी ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध है। इन्हीं में से एक प्रमुख धार्मिक स्थल है— गुरुद्वारा बंगला साहिब, जो अपनी शांति, सेवा भावना और आध्यात्मिक माहौल के लिए जाना जाता है। हाल ही में मुझे इस गुरुद्वारे में जाने का अवसर मिला और यह अनुभव वाकई यादगार रहा।

गुरुद्वारा बंगला साहिब का इतिहास सिख धर्म के आठवें गुरु, गुरु श्री हरकृष्ण जी से जुड़ा हुआ है। सन् 1664 में जब दिल्ली में चेचक और हैजा जैसी बीमारियाँ फैल गई थीं, तब गुरु श्री हरकृष्ण जी इस स्थान पर ठहरे हुए थे। उस समय यह राजा जयसिंह का बंगला हुआ करता था, इसलिए बाद में इसे 'बंगला साहिब' कहा जाने लगा।

गुरु श्री हरकृष्ण जी ने यहाँ रहकर पीड़ित लोगों की सेवा की, उन्हें जल पिलाया और उनके दुख-दर्द दूर किए। कहा जाता है कि जिस सरोवर

का जल उन्होंने लोगों को पिलाया, उससे बीमार लोग ठीक हो जाते थे। दुर्भाग्यवश, सेवा करते-करते गुरु हरकृष्ण जी स्वयं भी बीमार पड़ गए और अल्पायु में ही उन्होंने शरीर त्याग दिया। उनकी करुणा और सेवा भावना की याद में इस स्थान पर बाद में यह भव्य गुरुद्वारा बनाया गया।

यह स्थान सिर्फ सिख समुदाय के लिए नहीं, बल्कि हर धर्म के लोगों के लिए खुला है। यहाँ आने वाले हर व्यक्ति को समान रूप से सम्मान दिया जाता है। गुरुद्वारा बंगला साहिब आज भी लोगों को सेवा, विनम्रता और मानवता का पाठ सिखाता है।

जैसे ही मैं गुरुद्वारे के अंदर पहुँचा, मेरे मन को एक अलग ही शांति का एहसास हुआ। सफेद संगमरमर से बना विशाल भवन, चारों ओर से आती प्रार्थना की ध्वनि और सेवा भाव से काम करते लोग— यह सब बहुत प्रेरणादायक लगा। मैंने वहाँ लंगर हॉल भी देखा, जहाँ हर व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के, एक साथ बैठकर लंगर का सेवन करता है। वहाँ की सेवा भावना और अनुशासन देखकर मन में सच्ची श्रद्धा उत्पन्न हुई।

यश
प्रथम वर्ष



गुरुद्वारा शीशगंज साहिब दिल्ली के नौ ऐतिहासिक गुरुद्वारों में से एक है, जो पुरानी दिल्ली के अति व्यस्त बाजार चौदनी चौक में स्थित है। यह गुरुद्वारा सिख धर्म के नौवें गुरु, श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहादत का पवित्र स्थल है, जिन्होंने धर्म की रक्षा के लिए अपना शीश न्योछावर कर दिया था। इस गुरुद्वारे का हर कोना बलिदान, साहस और धार्मिक स्वतंत्रता के महत्व को बताता है, जिससे यह श्रद्धालुओं के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थस्थल बन गया है।

गुरुद्वारा शीशगंज साहिब की संरचना एक शांत और सुंदर वातावरण का निर्माण करती है। यह संरचना शुद्ध सफेद संगमरमर से बनी हुई है, जो पवित्रता और शांति का प्रतीक है। इस सफेद संरचना के ऊपर स्वर्ण-मंडित गुंबदों का समूह चमकता है, जो

श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। गुरुद्वारे का मुख्य हॉल 'दरबार साहिब' है, जहाँ श्री गुरु ग्रंथ साहिब को एक अलंकृत पालकी साहिब में स्थापित किया गया है। यहाँ चौबीसों घंटे गुरबाणी, शब्द और कीर्तन का पाठ होता है जो मन को शांति प्रदान करता है।

यदि हम इतिहास की बात करें, तो यह वही पवित्र स्थान है जहाँ 11 नवंबर 1675 को मुगल राजा औरंगजेब के आदेश पर गुरु तेग बहादुर जी का शीश अलग कर दिया गया था। उन्होंने जबर्न धर्म परिवर्तन करने को कहा, लेकिन गुरु तेग बहादुर जी ने धर्म बदलने से साफ इनकार कर दिया। शहादत के बाद गुरु जी के शीश को उनके शिष्य 'भाई जेता' ने मुगल अधिकारियों की कड़ी निगरानी के बावजूद बड़ी बहादुरी से वहाँ से निकाला और उन्हें पंजाब के आनंदपुर साहिब ले गए, जहाँ उनका अंतिम संस्कार किया गया। इस पवित्र स्थल पर पहला ढाँचा 1783 में सिख सैन्य नेता सरदार बघेल सिंह द्वारा बनवाया गया था, जिन्होंने अपनी सेना के साथ दिल्ली पर चढ़ाई की थी और मुगल शासकों से समझौता करके यहाँ और

दिल्ली के अन्य महत्वपूर्ण गुरुद्वारों का निर्माण करवाया था। वर्तमान इमारत का निर्माण 1930 के दशक में हुआ था, जिसमें स्वर्ण-मंडित गुंबद प्रमुख हैं।

गुरुद्वारे में एक पवित्र कुआँ भी है, जिसके बारे में मान्यता है कि गुरु तेग बहादुर जी ने शहादत से पहले इसी जल में स्नान किया था। यहाँ चौबीसों घंटे लंगर चलता है, जहाँ जाति, धर्म का भेदभाव न करते हुए हजारों लोगों को भोजन कराया जाता है। गुरुद्वारे के सामने का चौक वह जगह है जहाँ गुरु जी के साथ उनके तीन शिष्यों—भाई मति दास, भाई सती दास और भाई दयाला जी—को अमानवीय रूप से शहीद किया गया था। दरबार साहिब के नीचे वह विशेष स्थान है जहाँ गुरु तेग बहादुर जी का शीश कलम किया गया था। यहाँ हजारों श्रद्धालु आकर माथा (मत्था) टेकते हैं और अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

यहाँ यात्रियों के लिए अनेक सुविधा है। परिसर में दूर से आए श्रद्धालुओं के लिए विश्राम कक्ष और लॉकर्स की सुविधा भी उपलब्ध है, जो गुरुद्वारे के सेवा भाव को दर्शाती है।

हरगुन कौर
907

प्रथम वर्ष

अक्षरधाम मन्दिर



अक्षरधाम मंदिर भारत की राजधानी नई दिल्ली में यमुना नदी के तट पर स्थित है। यह मंदिर भगवान स्वामीनारायण को समर्पित है। इस मंदिर की बनावट अत्यंत सुंदर है। इस मंदिर का निर्माण स्वामीनारायण संप्रदाय द्वारा किया गया था। इस मंदिर के निर्माण का प्रमुख विचार प्रमुख स्वामी महाराज का था। मंदिर का उद्घाटन 6 नवम्बर 2005 को हुआ। इसे बनाने में लगभग 5 वर्ष लगे। निर्माण कार्य में 11,000 से अधिक कारीगरों और कई इंजीनियरों ने दिन-रात मेहनत की।

इस मंदिर का पूरा निर्माण बिना लोहे के किया गया है, इसका मुख्य भवन गुलाबी पत्थर और सफेद संगमरमर से बनाया गया है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान स्वामीनारायण की सुंदर मूर्ति स्थापित है। मंदिर में लगभग 234 नक्काशीदार स्तम्भ, 9 बड़े गुम्बद और 20,000 से अधिक

मूर्तियाँ हैं। इस मंदिर के चारों ओर एक सुन्दर बगीचा 'भारत उपवन' है। यहाँ पर भारत के महान लोगों जैसे महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और महाराणा प्रताप की मूर्तियाँ हैं।

मंदिर की दीवारों पर शिल्प कला की अद्भुत आकृतियाँ बनी हैं जैसे पशु-पक्षी, फूल-पत्तियाँ और प्राचीन जीवन की कथाएँ दिखाई देती हैं। जो मंदिर में स्वामीनारायण भगवान के जीवन और भारत की प्राचीन सभ्यता को प्रदर्शित करते हैं। इसमें फिल्म, एनिमेशन और मूर्तियों के माध्यम से भक्ति और सेवा का संदेश दिया गया है। यहाँ हर शाम पानी, रोशनी और संगीत के साथ एक धार्मिक कहानी दिखाई जाती है (सहज आनंद वॉटर शो), यह दृश्य अत्यंत सुन्दर होता है। यहाँ बहुत बड़ा सीढ़ीदार कुंड है जिसके बीच में एक सुन्दर फव्वारा

है। यहाँ का वातावरण बहुत शांत और हरियाली से भरा है। यहाँ भंडारे, सेवा कार्य और सांस्कृतिक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। इस मंदिर में स्वच्छता का पूर्ण ध्यान दिया जाता है और यहाँ पर प्लास्टिक का प्रयोग नहीं किया जाता है। यहाँ साफ-सफाई और प्राकृतिक सुंदरता का ध्यान रखने के लिए अनेक कर्मचारी कार्यरत हैं। इस मंदिर में प्रवेश करने से पहले सामग्री एवं फोन जमा कर लिए जाते हैं। मंदिर के अंदर किसी भी व्यक्ति को, किसी भी प्रकार की सामग्री ले जाना वर्जित है। यहाँ आने वाले लोग भी इस स्थान की स्वच्छता और अनुशासन का पालन करते हैं।

यह मंदिर भारतीय संस्कृति, कला और वास्तुकला को दिखाता है। यहाँ जाकर ऐसा लगता है जैसे हम किसी स्वर्गिक स्थल पर पहुँच गए हों, जहाँ मन की शांति और आँखों को सुंदरता का अनुभव होता है। इसलिए यहाँ हमेशा विदेश के लोग भी भ्रमण करने आते हैं और यहाँ की स्मृतियाँ अपने साथ अपने देश ले जाकर वहाँ के लोगों को बताते हैं। तथा इस मंदिर को भारत की 'आध्यात्मिक राजधानी' भी कहा जा सकता है।

रिया
प्रथम वर्ष

लाल किला



आज 21 अक्टूबर 2025 को मुझे दिल्ली के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल लाल किला घूमने का अवसर मिला। जैसे ही मैं लाल किले के विशाल द्वार के सामने पहुँचा, मेरे मन में इतिहास के पन्ने खुलने लगे। यह वही जगह है जहाँ से हर साल 15 अगस्त को हमारे प्रधानमंत्री राष्ट्र को संबोधित करते हैं। सामने लाल बलुआ पत्थर से बना यह किला अपनी भव्यता से मानो भारत की गौरवशाली परंपरा का परिचय दे रहा था।

मैंने टिकट लेकर प्रवेश द्वार, 'लाहौरी गेट' से अंदर प्रवेश किया। अंदर जाते ही दोनों ओर प्राचीन दुकानों की कतारें दिखीं, जिन्हें 'मीना बाजार' कहा जाता है। कभी यहाँ मुगल काल में रानियों और राजकुमारियों के लिए खास वस्तुएं बेची जाती थीं। अब यहाँ शिल्पकला, स्मारिका और पारंपरिक आभूषणों की दुकानें हैं। वहाँ की हलचल और रंग-बिरंगे सामान देखकर ऐसा लगा जैसे मैं इतिहास के किसी जीवंत बाजार में पहुँच गया हूँ।

थोड़ा आगे बढ़ते ही मैंने 'दीवान-ए-आम' देखा। यह वह जगह है जहाँ बादशाह जनता की फरियादें सुना करते थे। लाल पत्थर के खंभों पर बनी नक्काशी और सुंदर मेहराबें देखकर मैं कुछ क्षणों के लिए

ठहर गया। हर कोना मानो बीते युग की कहानी कह रहा था। इसके बाद मैंने 'दीवान-ए-खास' देखा, जहाँ मुगल बादशाह अपने खास दरबार लगाते थे। यहाँ की दीवारों पर की गई सोने-चाँदी की जड़ाई और कीमती पत्थरों की नक्काशी वाकई अद्भुत है।

किले के अंदर घूमते हुए मैंने रंग महल, मोती मस्जिद और हमाम देखे। रंग महल की छत पर बनी चित्रकारी और बीच में बना फव्वारा इसकी सुंदरता को और बढ़ा देते हैं। कहा जाता है कि यह महल शाही परिवार की रानियों के विश्राम के लिए बनाया गया था। वहीं, मोती मस्जिद की सफेद संगमरमर की चमक सूर्य की रोशनी में और भी निखर जाती है। मैंने किले की ऊँची प्राचीरों से यमुना नदी की दिशा में भी देखा। हवा में एक अजीब-सी शांति थी, लेकिन दीवारों पर इतिहास की गूँज सुनाई दे रही थी— युद्धों की, जीतों की, और आजादी की। यही वह स्थान है जहाँ 1857 की क्रांति के दौरान भी आजादी की आवाज गूँजी थी।

किले के अंत में मैंने संग्रहालय भी देखा, जहाँ मुगल काल के हथियार, चित्र, वस्त्र और पुराने दस्तावेज रखे गए हैं। इससे मुझे भारत के इतिहास और संस्कृति के बारे में गहराई से जानने का मौका मिला। जब मैं किले से बाहर निकला, तो सूर्य की सुनहरी किरणें उसकी दीवारों पर पड़ रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे लाल किला अब भी हमारी स्वतंत्रता और गौरव की कहानी कह रहा हो।

नितिन
प्रथम वर्ष

AI और बदलती युवा पीढ़ी: तकनीक की दुनिया में युवा और AI का संगम



आज की युवा पीढ़ी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) में एक गहरा और अनूठा रिश्ता बनता जा रहा है। AI ने ना केवल उनके सीखने और काम करने के तरीकों को बदल दिया है, बल्कि जीवन के सोचने—समझने के नजरिए को भी प्रभावित किया है। यह तकनीक उनके लिए अवसरों के नए द्वार खोलती है, जिससे वे अपने सपनों को और भी बेहतर तरीकों से पूरा कर सकते हैं।

युवा वर्ग आज AI की मदद से अपनी पढ़ाई को अधिक कुशल और प्रभावी बना रहा है। डिजिटल तकनीकों और AI टूल्स के माध्यम से जानकारी तक पहुंच आसान हो गई है, जिससे उनकी सोच और ज्ञान, सीमाओं से परे बढ़ रहा है। वे अपने सवालों का तुरंत उत्तर पा सकते हैं, जटिल विषयों को सरलता से समझ सकते हैं और अपनी रुचि के अनुसार नए कौशल सीख रहे हैं। यह संपूर्ण प्रक्रिया उनकी रचनात्मकता और समस्या सुलझाने की क्षमता को निखारती है।

सामाजिक रूप से भी युवा AI के प्रभाव को स्पष्ट रूप से महसूस कर रहे हैं। वे नए तरीके से बातचीत कर रहे हैं, नए पटल पर अपने विचार साझा कर रहे हैं और वैश्विक स्तर पर जुड़ाव महसूस कर रहे हैं। हालांकि, डिजिटल दुनिया में इस गहन जुड़ाव के साथ, व्यक्तिगत संबंधों और पारंपरिक संवाद की भूमिका कम

होती जा रही है, जो एक चुनौती भी है। रोजगार के क्षेत्र में भी युवाओं को AI ने नए अवसर दिये हैं, लेकिन यह पुराने कौशलों की जगह नई दक्षताओं की मांग करता है। युवा अब ऐसे वक्त में हैं जहाँ उन्हें निरंतर सीखते रहना होगा और तकनीक के साथ तालमेल बिठाना होगा। AI ने कई नौकरियों को बदल दिया है, मगर साथ ही ये नई नौकरी और उद्योग के लिए संभावनाएं भी लेकर आया है। इस परिवर्तन में सफल होने के लिए युवाओं को लचीला और जागरूक बनना होगा।

इस पूरी यात्रा में AI ने ना केवल युवाओं की क्षमता बढ़ाई है बल्कि मानसिक स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं में भी मदद की है। तकनीक की सहायता से युवा अपनी मानसिक समस्याओं से निपटने के लिए बेहतर संसाधन पा रहे हैं, जिससे उनका समग्र विकास संभव हो रहा है। हालांकि, इस सब के बीच उन्हें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि तकनीक का अति प्रयोग या निर्भरता उन्हें वास्तविक दुनिया से दूर न ले जाये। समग्र रूप से देखा जाए तो AI और युवा वर्ग का मेल एक नई क्रांति की शुरुआत है।

यह एक ऐसा युग है, जहाँ युवा AI के माध्यम से अपने जीवन को बेहतर, अधिक सक्षम और अधिक सशक्त बनाने में लगे हैं। इसके साथ ही, उन्हें सावधानी भी बरतनी होगी ताकि वे इस तकनीक का सही और सकारात्मक उपयोग कर सकें। यही वह रास्ता है जो युवा पीढ़ी को उज्जवल भविष्य की ओर ले जाएगा।

रुद्राक्ष शर्मा
द्वितीय वर्ष

न्यायमूर्ति सूर्यकांत बने भारत के नए चीफ जस्टिस



भारत की न्यायपालिका के इतिहास में यह एक नया अध्याय है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने 24 नवंबर 2025 को भारत के 53वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली, और सुप्रीम कोर्ट की सर्वोच्च कुर्सी संभाली। हरियाणा के सामान्य परिवार में जन्मे सूर्यकांत का जिला अदालत की वकालत से, देश की सर्वोच्च कुर्सी तक पहुँचना अपने-आप में एक प्रेरक कहानी है। पिता संस्कृत शिक्षक थे, और उनकी प्रारंभिक शिक्षा साधारण स्कूलों में हुई। कानून के क्षेत्र में उनकी प्रतिबद्धता, साफ दृष्टि, और संवैधानिक मूल्यों के प्रति उनके उपजे विश्वास ने उन्हें आज न्यायपालिका के सर्वोच्च स्थान तक पहुँचा दिया है।

न्यायिक सेवा में उनका अनुभव तीन दशकों से अधिक का है। 2004 में वह पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट में जज बने थे, और 2018 में हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश।

इसके बाद 2019 में वह सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीश नियुक्त हुए। उनके कार्यकाल का महत्वपूर्ण पक्ष यह माना जाता है कि उन्होंने हमेशा न्याय, नागरिक अधिकारों, और संविधान के मूल ढाँचे की रक्षा के सिद्धांत को प्राथमिकता दी। उनकी न्यायिक शैली सरल, स्पष्ट और तर्कपूर्ण मानी जाती है।

सुप्रीम कोर्ट में रहते हुए जस्टिस सूर्यकांत कई बड़े और ऐतिहासिक फैसलों का हिस्सा रहे। इनमें अनुच्छेद 370, वन रैंक-वन पेंशन मामला, पेगासस जासूसी जांच, नोटबंदी की वैधता, राजद्रोह कानून की समीक्षा, LGBTQIA+ अधिकार, NEET परीक्षा विवाद, इंटरनेट शटडाउन और मौलिक अधिकारों से जुड़े महत्वपूर्ण फैसले शामिल हैं। उनके फैसलों में सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि उन्होंने नागरिक अधिकारों और राष्ट्रीय सुरक्षा के बीच संतुलन बनाए रखने की एक परिपक्व कोशिश की है। उदाहरण के तौर पर जम्मू-कश्मीर में अनिश्चितकालीन इंटरनेट बंदी को असंवैधानिक मानते हुए उन्होंने इसे नागरिक स्वतंत्रता पर चोट बताया था।

मुख्य न्यायाधीश के 15 महीने के कार्यकाल में उनके सामने कई बड़ी चुनौतियाँ होंगी जैसे, न्यायपालिका में जरूरी लंबित मामलों, डिजिटल जस्टिस सिस्टम को अधिक प्रभावी बनाना, संवैधानिक मुद्दों पर स्पष्ट न्यायिक दिशा तय करना, और न्याय प्रणाली पर बढ़ते सामाजिक-राजनीतिक दबावों के बीच संस्थागत संतुलन बनाए रखना। वहीं, न्यायिक स्वतंत्रता, आम नागरिकों की न्याय तक पहुँच, और मानवाधिकारों की रक्षा उनके कार्यकाल के प्रमुख परीक्षण होंगे।

सूर्यकांत का मुख्य न्यायाधीश बनना सिर्फ एक प्रशासनिक बदलाव नहीं, बल्कि यह संकेत है कि भारतीय न्यायपालिका एक ऐसे दौर में प्रवेश कर रही है जहाँ संविधान, तकनीक, नागरिक स्वतंत्रता और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्न पहले से कहीं अधिक जटिल हैं। आने वाले महीनों में, उनके नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट के फैसले, न केवल कानूनी फैसलों को प्रभावित करेंगे, बल्कि भारत के लोकतांत्रिक ढाँचे और सामाजिक विमर्श को भी नए दिशा-निर्देश देंगे।

अंशु वर्मा
तृतीय वर्ष

सकारात्मक सोच: सफलता और खुशहाली की कुंजी

सकारात्मक सोच एक ऐसी मानसिकता है, जो न केवल जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलती है, बल्कि हमारे व्यक्तित्व और कार्यक्षमता को भी प्रभावित करती है। यह जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने का एक बेहतर तरीका प्रदान करती है और हमारे सपनों को साकार करने की दिशा में एक मजबूत सहारा बनती है। आज के तेजी से बदलते और प्रतिस्पर्धी वातावरण में सकारात्मक सोच को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस निबंध में हम सकारात्मक सोच के महत्व, इसके लाभ और इसे अपनाने के उपायों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

सकारात्मक सोच का महत्व सकारात्मक सोच का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह जीवन की समस्याओं और चुनौतियों का समाधान ढूँढ़ने का तरीका बदल देती है। जब हम किसी समस्या का सामना करते हैं, तो सकारात्मक सोच हमें उसे एक अवसर के रूप में देखने की क्षमता प्रदान करती है, न कि एक बाधा के रूप में। यह मानसिक शांति और संतुलन बनाए रखने में मदद करती है, जिससे हम किसी भी स्थिति में अपने निर्णय बेहतर

तरीके से ले सकते हैं।

सकारात्मक सोच का एक और बड़ा लाभ यह है कि यह हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाती है। जब हम अपने विचारों को सकारात्मक दिशा में मोड़ते हैं, तो हम खुद को अधिक सक्षम और समर्थ महसूस करते हैं, जिससे हमें मुश्किल समय में भी अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा मिलती है। यह हमें जीवन के किसी भी मोड़ पर असफलता के बजाय सफलता के रास्ते पर अग्रसर करती है।

सकारात्मक सोच के लाभ

1. मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार:— सकारात्मक सोच न केवल हमारी मानसिक स्थिति को स्थिर रखती है, बल्कि यह शारीरिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डालती है। अध्ययन से यह सिद्ध हो चुका है कि जो लोग सकारात्मक सोच रखते हैं, वे मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद से कम पीड़ित होते हैं। उनका इम्यून सिस्टम भी मजबूत रहता है, जिससे उनका शरीर अधिक ऊर्जावान और स्वस्थ रहता है।

2. आत्मविश्वास और प्रेरणा में वृद्धि:— सकारात्मक सोच आत्मविश्वास को मजबूत करती है। जब हम खुद पर विश्वास करते

हैं, तो हमारे अंदर चुनौतियों का सामना करने की ताकत आती है। यह हमें अपनी कमजोरियों को सीखने के अवसर के रूप में देखने की प्रेरणा देती है और हर असफलता के बाद एक नई उम्मीद से आगे बढ़ने की शक्ति देती है।

3. सफलता की दिशा में मार्गदर्शन:— सफलता केवल कठिन परिश्रम और सही दिशा में प्रयास करने से मिलती है। सकारात्मक सोच यह सुनिश्चित करती है कि हम अपनी मेहनत को सही दिशा में लगाएँ। यह हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रेरित करती है और हमें किसी भी स्थिति में हार मानने के बजाय नए रास्ते खोजने के लिए उत्साहित करती है।

4. समस्याओं का समाधान:— जब हम समस्याओं को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं, तो हम उन्हें बेहतर तरीके से हल करने के रास्ते खोज लेते हैं। सकारात्मक सोच के माध्यम से हम समस्याओं को एक समाधान ढूँढ़ने की क्षमता विकसित करते हैं। यह हमें कठिन परिस्थितियों से मानसिक रूप से निपटने के लिए तैयार करती है।

सकारात्मक सोच को कैसे अपनाएँ

1. आभार की भावना विकसित करें:— जीवन की छोटी-छोटी खुशियों और उपलब्धियों के लिए आभार व्यक्त करना सकारात्मक सोच को बढ़ाता है। जब हम अपने जीवन की अच्छाइयों को पहचानते हैं, तो हम

हर स्थिति में सकारात्मक पहलू देख पाते हैं।

2. आत्म-संवाद में बदलाव:— अपने आप से सकारात्मक तरीके से बात करना महत्वपूर्ण है। जब हम खुद से "मैं यह कर सकता हूँ" जैसे विचार रखते हैं, तो यह मानसिक संतुलन बनाए रखता है और हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

3. नकारात्मक विचारों को बदलें:— जब भी नकारात्मक विचार आए, तो उन्हें सकारात्मक विचारों में बदलने का प्रयास करें। यह मानसिक रूप से हमें मजबूत बनाता है और हमें अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रखता है।

4. सकारात्मक लोगों का साथ रखें:— अपने आसपास सकारात्मक और प्रेरणादायक लोगों को रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसे लोग न केवल प्रेरित करते हैं, बल्कि उनके विचार और दृष्टिकोण हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव लाते हैं।

रुद्राक्ष शर्मा
द्वितीय वर्ष

एनसीसी ने किया कॉलेज में रक्तदान

13 अक्टूबर 2025 को श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज में 'द विजुयंट एनसीसी' के तत्वावधान में ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन किया गया। यह आयोजन लगभग 6 घंटे तक चला, जिसमें कुल 150 प्रतिभागियों ने अपने जीवन को दूसरों के जीवन के लिए समर्पित करने का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में लेफ्टिनेंट. (डॉ.) घनश्याम बैरवा और प्रोफेसर दीपमाला ने मार्गदर्शन प्रदान किया। कॉलेज प्राचार्य ने इस समाज सेवा कार्य के लिए पूरी सहमति दी, फैंकल्टी सदस्य, अधिकारी और हाउसकीपिंग स्टाफ ने हर स्तर पर सहयोग किया, जिससे यह ड्राइव सुचारु और सफल रूप से संपन्न हो सका। इस ब्लड डोनेशन कैंप का उद्देश्य न केवल रक्तदान के महत्व को उजागर करना था, बल्कि युवाओं में समाज सेवा और मानवीय जिम्मेदारी की भावना को भी जागृत करना था। प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया, जिससे कई जरूरतमंदों के जीवन में नई उम्मीद जगी। एनसीसी कैडेट्स ने इस अवसर पर सभी सहयोगियों, फैंकल्टी और प्रतिभागियों का हृदय से धन्यवाद किया, और आशा व्यक्त की कि ऐसे सामाजिक कार्य आगे भी निरंतर होते रहेंगे।

अंकित सिंह
तृतीय वर्ष

मार्गदर्शक मंडल

संरक्षक : प्रो. बलजीत सिंह, कार्यवाहक प्राचार्य, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज
मार्गदर्शिका : डॉ. अंजु बाला, विभाग प्रभारी, हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

संपादक मंडल

संपादक : डॉ. सविलता यादव, सहायक प्राध्यापक, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
छात्र संपादकीय : सौरभ मिश्रा, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
टीम
मोहित वशिष्ठ, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
अंशु वर्मा, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष
रुद्राक्ष शर्मा, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, द्वितीय वर्ष
अंकित सिंह, बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, तृतीय वर्ष